लावारिस नदी का दर्द

(Eco Poems)

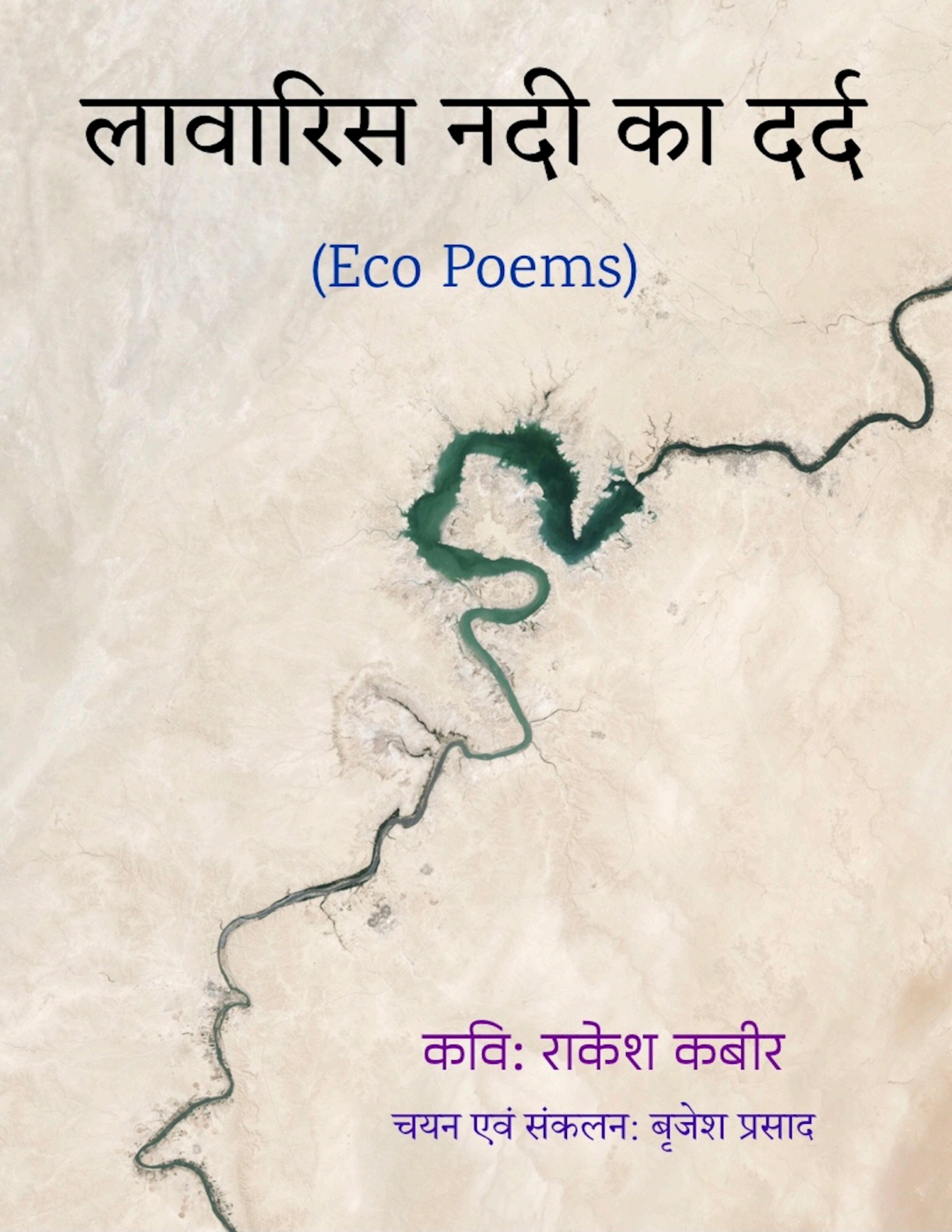

कवि: राकेश कबीर

चयन एवं संकलन: बृजेश प्रसाद

लावारिस नदी का दर्द

(Eco Poems)

कवि-राकेश कबीर

चयन एवं संकलन : बृजेश प्रसाद

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2023

© राकेश कबीर

ईको पोएम्स

मै अभी ब्रज क्षेत्र के बदायूं जनपद मे हूँ। यहाँ घरों और खेतों मे राष्ट्रीय पक्षी मोर पाए जाते। हमारे घर मे खूब जगह है और पेड़ पौधे भी हैं, यहाँ कोई उन्हे छेड़ता नहीं तो सुरक्षित महसूस करते हैं और आराम से टहलते रहते हैं। पिछले पंद्रह दिनों से मोर नहीं आ रहे केवल एक दो मोरनियाँ आ रही हैं। मुझे आशंका है कि मोर को किसी ने मारकर खा लिया होगा। मोर तेज नहीं भाग पाते इसलिए व्यावसायिक उद्देश्य से लोग उनके पंख जबरदस्ती तोड़ लेते हैं जिसके कारण मोर जल्दी किसी पर भरोसा नहीं करते लेकिन जब भरोसा कर लेते हैं तो हाथ से लेकर दाना चुगते हैं। इस घटना का जिक्र करने का उद्देश्य यह है कि पृथ्वी के सबसे बुद्धिमान प्राणी इंसान ने अपनी बुद्धि विवेक का दुरुपयोग इस हद तक किया है कि जल, जंगल, जमीन, नदियां सबको प्रदूषित कर जहरीला बना दिया है। वह गंभीर बीमारियों की गिरफ्त मे है लेकिन उसे जीवनदायी प्रकृति को बचाने की कोई चिंता नहीं है। पहाड़ उजाड़कर पीसकर सीमेंट बनाने, पक्के घरों की छत बनाने, ग्रेनाइट-संगमरमर लगाने, घरों को होटल की तरह सजाने मे हम शहरी लोगों ने इटली से लेकर दिल्ली राजस्थान और हिमालय तक को समतल बनाने का प्रण सा ले लिया है। हमे तेज भागती सड़के मात्र नहीं आठ लेन वाले एक्सप्रेसवे चाहिए जिसमे कितने पहाड़ टूटकर क्षैतिज बिछ जाते है, हजारों एकड़

हरी फसलों वाले खेत धरती से दस फुट ऊपर उठे हुए तेज से रफ्तार भागने लगते हैं। हजारों पेड़ कट जाते हैं, कई तालाब, ताल और झीलें भी अस्तित्व खो देती हैं। समतल उपजाऊ भूमि गड्ढों मे तब्दील होती और वहाँ की मिट्टी से ऊंची सड़क बन जाती है। यह सब घटनाएं प्रकृति के विभिन्न घटकों और उपादानों को नष्ट कर रही हैं जिसके कारण जलवायु चक्र, मानसून, अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसी स्थितियाँ सामने आ रही हैं। नदियों को नगरपालिका का गंदा नाला और किसानों के खेत मे तब्दील होते देखना बहुत ही कष्टकारी है। झीलों मे बाहर से लाकर जलकुंभी डालकर उन्हे उथलाकर मिट्टी भरकर कब्जा करने वाले भूमाफिया कैंसर की तरह हर गाँव शहर मे फैल चुके हैं। अमेरिकी वाइल्डरनेस आंदोलन के मशहूर विद्वान अलड़ो लियो पोल्द ने मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिकता को अपरिहार्य बताते हुए लैंड एथिक्स की अवधारणा प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि मनुष्य को खुद को धरती का विजेता समझने की जगह यहाँ निवास करने वाला सामान्य नागरिक समझना चाहिए: "A thing is right when it tends to preserve the integrity, stability, and beauty of the biotic community, it is wrong when it tends otherwise. Land ethic changes the role of Homo sapiens from conqueror of the land community to plain member and citizen of it".

मैं अपने वर्तमान आवास के दृष्टिगत यहाँ की ईकालजी और ईकोसिस्टम को ध्यान मे रखते हुए बात करू तो गंगा नदी के एक तरफ बदायूं है और दूसरी तरफ (दक्षिण) कासगंज जनपद है। गंगा नदी के किनारे उगने वाली लंबी और मजबूत घास जिससे झोपड़ियाँ और छप्पर इत्यादि बनाए जाते थे को कास कहते हैं। इस घास की बहुलता के कारण इस स्थान और जनपद का नाम कासगंज पड़ा। दुख की बात है कि इस घास का अब कोई उपयोग नहीं है। घरों से भगाई गई गायों और बैलों ने कास के जंगलों बीच अपना आशियाना बना लिया है जहां से वे किसानों के खेतों पर झुंड बनाकर आक्रमण करते हैं। हमारे घरों से भगाए गए गाय बैल जो कभी परिवार का हिस्सा हुआ करते थे आज सड़कों पर आवारा घूम रहे, किसानों के खेतों को नष्ट कर रहे। शहरों मे वे पालिका और नगर निगम की प्लास्टिक खाकर बेमौत मार रहे। डीजल चालित ट्रैक्टर से लेकर जेसीबी मशीनों ने खेत-खलिहान पर कब्जा कर लिया है। पहले हमारे घरों के कुछ हिस्से कच्ची मिट्टी, कास, पतहर, नरकट, बेहया और बांस से बनते थे, रस्सियाँ भी कास और पटसन जूट से बनती थीं, कुछ हिस्से पक्की ईंट/खपरैल से बनते थे जो हमारे अपने खेतों की मिट्टी से पकाकर बनते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारी बसावट के आसपास हमारे जरूरत की प्रत्येक वस्तु प्रकृति ने उपलब्ध कराए थे लेकिन हमने बाजार के प्रचार के प्रभाव मे तात्कालिक लाभ के वशीभूत होकर अपने संसाधनों का और खुद का सत्यानाश किया है।

मानव के जीवन यापन के तरीकों मे आए बदलाव और प्रकृति के विभिन्न अंगों मे हुए प्रदूषण और गिरावट को बहुत नजदीक से निरीक्षण करते हुए, सतर्क दृष्टि रखते हुए कवियों ने अपनी कविताएं लिखी हैं जिन्हे इको पोएटिक्स, जिओ पोएटिक्स और टोपो पोएटिक्स की श्रेणी मे रखा गया है। अमेरिका और यूरोप के साहित्य मे इस पर बहुत काम हुआ है। इस साहित्य ने बताया है कि ‘नेचर पोइट्री’ और ‘इको पोएटिक्स’ मे मूलभूत अंतर है। कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुछ विद्वानों (के. वनजा, एवं प्रभाकरन) ने साहित्य एवं प्रकृति के अंतरसंबंधों पर काम किया है लेकिन उत्तर भारत के विद्वान अभी छायावादी प्राकृतिक कविता के मोह से उबर नहीं पा रहे हैं। कई लोग हिन्दी के आलोचक और प्रोफेसर मुझे सलाह दे चुके हैं कि प्रकृति के उपादानों मे आ रही गिरावट को कविता मे दर्ज करने की जगह साहित्य की अन्य विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास मे क्यों नहीं लिखते। कुछ लोगों का मानना है कि आदिवासियों ने जल, जंगल, जमीन पर हुए हमलों के खिलाफ ज्यादा अच्छे से लिखा है इसलिए अन्य कुछ लिखा जाना ठीक नहीं है। परंतु मेरा मानना है कि नदी, छोटी नदिया, जंगल, झील ताल, तालाब धरती के प्रत्येक हिस्से मे है, पशु पक्षी और जानवर भी अपनी विविधताओं के साथ सर्वत्र मौजूद हैं। मनुष्य के हरकतों की वजह से विभिन्न तरह के फ्लोर और फ़ाउना खतरे मे हैं, विलुप्त हो रहे हैं इसलिए इन्हे कविता मे सर्वत्र और प्रभावी ढंग से दर्ज किया जाना अपरिहार्य है। कविता की ताकत

प्रकृति संरक्षण के प्रयासों को भी ताकत देगी। अमेरिका और यूरोप के साहित्यकार पृथ्वी को 'ए डैमिज्ड प्लानेट' मानते हुए कविताएं लिख रहे हैं, टिम क्रेसवेल (2022:375-76) ने अपने लेख ''राइटिंग (न्यू) वर्ल्डस: पोइट्री एण्ड प्लेस इन अ टाइम ऑफ इमर्जेंसी" मे इस संबंध मे लिखा है कि, "this recent flourishing is, itself, a continuation of a long tradition of geographies of literature and literary geographers which has, until recently, focused on novels rather than poetry"… I do like Juliana Spahr, who notes the necessity of accounting for both the 'beautiful bird' (the stereotypical object of nature poetry) and the 'bulldozer off the side that was destroying the bird's habitat (Spahr 2011:69) (what makes it ecopoetry). In this formulation, traditional nature poetry is based on a separation of he natural world from the human world and insists on the otherworldliness of natural objects as beautiful, innocent or awe-inspiring. Eco poetry, on the other hand, is more focused on the ways we make the house of earth into a home, and all the ways we do that badly". इको पोइट्री परंपरागत ढंग से चली आ रही प्राकृतिक-रोमांटिक कविता के स्थान पर प्रकृति के ऊपर आ रहे संकट को दर्ज करने

का प्रयास है। यह प्राकृतिक उपदानों को किसी और दुनिया की वस्तु मानने के स्थान पर इसी दुनिया से जोड़कर, मनुष्य से प्रकृति के पारस्परिक संबंधों और अंतरनिर्भरता पर केंद्रित करते हुए कविता रचने को महत्व देती है। प्रस्तुत संग्रह की कविताएं मानव और प्रकृति के आपसी संबंधों से उत्पन्न समस्याओं पर केंद्रित हैं इसलिए इन्हे 'इको पोएटिक्स' के रूप मे चिन्हित करते हुए एक अलग संग्रह मे दी जा रही हैं, आशा है कि ये अपने उद्देश्य मे सफल होंगी।

रेफरेंस

Cresswell, Tim (2022) Writing (new) worlds: poetry and place in a time of emergency, in Human Geography Vol. 104, No.4, pp 374-389, Routledge, London.

Spahr, j. (Edt.) (2011) Well Then There Now, David R. Godine, Boston, USA.

अनुक्रम

बेचारी नदियाँ	11
सई	12
सूखती नदियां	13
सरायन	15
रोते पहाड़	17
पगडंडियाँ	18
जंगल और नदी	20
ठग	22
विद्रोही मछलियाँ	23
हवा पानी और तूफ़ान	24
नदी गीत	25
तालाब	27
बारिश और तितलियाँ	28
शर्मीले मेढ़क	29
धोंधड़	31
वापसी	32

नदी शांत है	34
नदियाँ ही राह बताएँगी	36
चंबल	37
कुँवरवर्ती	39
स्याही-सी एक नदी	44
एक अर्जी नदी के नाम	48
झील और नदी	51
कुदरत की चकबंदी	54
घुटती साँस	56
लावारिस नदी का दर्द	57
रोते पहाड़	59
कुछ सूखे हुए दिन	60
विकास तुम न आना	62
साँपों की ख़ुशी	64
सब अति होना	65
गंगा	67
सूख गए शीशम	70

साल	72
पत्थर जन्नत के	74
लौटा हुआ मौसम	75
गुलमोहर	76
गेहूँ की जवानी	78
नदी के पत्थर	79
बंजर समय	81
एक किसान का मरना	83
आलू	84
गिलावा	86
दिल्ली	88
दरख़्त	90
यहाँ तितलियां अब नही आती	91
रेत और नदी	92
बादल और दूब	93
मल्हार	94

बेचारी नदियाँ

कल-कल बहते गंदे नाले

नदियाँ सूखी जाती हैं,

सूख रही हैं झीलें कई

दरियाओं की साँस टूटी जाती है।

भर गए कुएँ सारे कूड़े से

तालाबों की भी दुर्गति हुई जाती है

अब तो शहर के गंदे नालों से ही

शेष है नदियों में मामूली सी हरकत

वरना पहाड़ वाले ने तो पानी की सप्लाई

उन्हें कब की बंद कर रखी है

कहाँ जाएँगे प्यास बुझाने बेजुबान परिंदे

इंसानो ने तो अपनी दुर्गति को खुद ठानी है!